आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 2/जून 2025
Received: 23/06/2025; Accepted: 24/06/2025; Published: 28/06/2025

दूसरे दशक के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन

मरिया पीटर
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
मद्रास विश्वविद्यालय
मेरीना कैंपस, चेन्नै – 5
फो.नं- 9941867857
ई मेलः mariapeterin2024@gmail.com

मरिया पीटर, दूसरे दशक के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 2/जून 2025**,(124-131) https://doi.org/10.5281/zenodo.15776882

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

नई सदी वैज्ञानिक, तकनीकी और कृत्रिम मेधा की प्रगति और परिवर्तनों का युग है। आधुनिक जीवन का हर स्तर जैसे व्यक्ति से लेकर, पारिवार, समाज और उससे जुड़े विभिन्न पक्ष जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आदि में कई परिवर्तन हुए हैं । इस सदी में विज्ञान और तकनीकी के विकास के कारण संचार माध्यमों का भरमार हो गया है। छोटे बच्चों से लेकर बड़े बुजुर्गों तक सब संचार माध्यमों का उपयोग करते हुए अनेक नये विषयों की जानकारी एक ओर हासिल कर रहे हैं, तो दूसरी ओर उसके दुष्परिणामों का शिकार भी बन रहे हैं। इसके समानांतर नारी जीवन भी अत्यंत गहरे रूप से प्रभावित होता आ रहा है।

नई सदी के परिवर्तनों की नींव 20 वीं सदी में ही देखी जाती है। स्वतंत्रता पूर्व नारी अपने माता-पिता व पति और ससुराल पर निर्भर रहा करती थी। वह शिक्षा और स्वतंत्र जीवन जीने से वंचित थी। उसे परंपरागत जीवन विधान को अपनाकर जीवन व्यतीत करना पड़ता था। बचपन में पिता, विवाहोपरांत पति और पति की मृत्यु के बाद बेटे के संरक्षण में उसे अपना जीवन बिताना पड़ता था। प्राचीन काल में उसके स्वतंत्र जीवन के लिए अयोग्य की जो घोषणा की गई थी, स्वतंत्रता पूर्व तक वही नियम चालू रहा था। भारत का पुनर्जागरण,

स्वामी दयानंद सरस्वती, राजा राममोहन राय आदि सामाज सुधारकों के प्रयासों से नारी जीवन में परिवर्तन आया। बाल विवाह, सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं से उसकी मुक्ति की कोशिशें हुई हैं। विधवा विवाह के द्वारा नारी जीवन को एक दिशा मिली। महात्मा गाँधी जैसे स्वतंत्र सेनानियों की पुकार से स्वतंत्रता संग्राम में कई महिलाएँ सक्रिय रही थी। स्वतंत्रता के बाद दहेज, अनमेल विवाह आदि विवाह से जुड़ी समस्याओं के प्रति भी समाज में चेतना लायी गई है। आधुनिक युग में विकसित नारीवाद और महिला सशक्तिकरण, नारी मुक्ति आदि आंदोलनों से नारी जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आया । वह अपने विवाह को खुद तय करने की क्षमता प्राप्त कर ली। नारी अपनी पारिवारिक और नौकरी के क्षेत्र की सभी जिम्मेदारियों को सक्षमता के साथ निर्वाह कर रही है।

स्वतंत्रता के बाद नारी जीवन को सुधारने के प्रयास किये गये हैं। स्त्री शिक्षा के द्वारा नारी जागृति का नारा बुलंद हुआ। भारत सरकार की ओर से नारी सुरक्षा, नारी स्वातंत्र्य आदि कायम करने के आवश्यक कदम उठाये गये हैं। नारी पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़े होने की ताकत धीरे-धीरे प्राप्त करने लगी।

नई सदी में नारी की स्थिति में बहुमुखी विकास देखा जाताहै। वह पढ़-लिखकर विभिन्न क्षेत्रों में अपने अस्तित्व को निरूपित करने और कामय रखने में सक्षम हुई है। वह अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखते हुए प्रगति की ओर बढ़ी है। ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में वह पुरुषों की बराबरी करने में कामयाब भी हो गई है। विदेशों में प्रवासी भारतीय नारी, भारतीय महिला के औन्नत्य को साबित करती हुई अपने आदर्श रूप को प्रकट रूप दे रही है। कल्पना चावला जैसी महिलाएँ नासा जैसे महान् संस्थाओं में काम करना ही नहीं, ग्रह-ग्रहांतरों तक भारतीयता को प्रतिष्ठित करने में सक्षम रही हैं। इस प्रकार नई सदी का यह काल नारी प्रगति का काल कहा जा सकता है।

लेकिन जैसे-जैसे नारी विभिन्न क्षेत्रों में कदम रखने लगी, वैसे-वैसे उसकी समस्याओं और जीवन संघर्ष के दायेरे भी विस्तृत हुए हैं। वह एक ओर पहले से चली आ रही समस्याएँ जैसे दहेज, वैवाहिक जीवन, पारिवारिक जीवन, कार्य क्षेत्र में लैंगिक व यौवन शोषण, पुरुष समाज का आधिपत्य आदि समस्याओं से पूरी तरह से मुक्ति नहीं पायी है, तो चंद नारियाँ आज भी संघर्षमय जीवन जीने केलिए विवश हो रही है। आज नारी को भले ही आर्थिक स्वातंत्रता प्राप्त हुई हो, लेकिन, उसकी आर्थिक स्वतंत्रता और आर्थिक स्वावलंब के कारण उसकी समस्याएँ और भी अधिक हुई हैं। वह परिवार में पैसे की लालच में स्वयं माता-पिता के स्वर्थ की शिकार बन रही है, तो दूसरी ओर पति से भी उसे आर्थिक और यौवन शोषण का शिकार होना पड़ रहा है। नौकरी पेशा नारी में भी आर्थिक स्वावलंब के कारण चंद अनपेक्षित गुण जैसे अहं, स्वार्थ, धन की लालच, स्वच्छंदता, विच्छृंखलता, अनैतिक संबंध, परिवारवालों को उपेक्षित करना, वैवाहिक जीवन के प्रति वितृष्णा, समलौंगिक संबंध, सहजीवन, विवाह के प्रति विमुखता आदि पनपे हैं, जिसके कारण न केवल नारी की उन्नति का तिरोगमन

हो रहा है, अपितु पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था खतरे में पड़ रही हैं तथा असामाजिक व्यवहार बढ़ता जा रहा है। पति-पत्नी के संबंध विघटित होना, अवैध व विवाहेतर संबंध, प्रेम, अंतर्जातीय प्रेम व विवाह, विधर्मी विवाह, पति-पत्नी का परस्पर अविश्वास आदि स्त्री और पुरुष को हत्या या आत्महत्या के लिए प्रेरित कर रहे हैं। परिणाम स्वरूप नई पीढ़ी की नारी वैवाहिक व्यवस्था के प्रति अविश्वास और जिम्मेदारियों से मुक्त जीवन बिताने की इच्छा से, अविवाहिता रह जाने या सहजीवन व समलैंगिक संबंधों को स्थापित करने की ओर आसक्त हो रही है या पढ़ाई करके नौकरी पाकर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है। विवाह से भी पढ़ाई और नौकरी को महत्व देने वाली लड़की का चित्रण **मनोज सिंह** ने अपने **कशमकश** उपन्यास में संचिता के माध्यम से किया है। संचिता की माँ के कथन से आजकल की नारी का विवाह को प्राथमिक न मानने की मानसिकता का परिचय मिलता है कि: **"अब इतना अच्छा लड़का घर बैठे बिठाए मिला है।... अब ये पढ़ाई... शादी के बाद खुद देख लेना.... और फिर शायद तेरी इच्छा ही न करे।... फिर उन्हें कौन-सी तुझ से नौकरी करानी है..."**[1]

वह नौकरी पेशा नारी के रूप में दुहरा जीवन जीने के लिए भी मजबूर हो रही है। शिक्षिता नारी होने के बावजूद भी वह समस्याओं से मुक्त होने में खुद को असमर्थ पा रही है । नौकरी के कारण वह भले ही आर्थिक रूप से स्वावलंब बनी, लेकिन अपने वेतन का अनुभव करने से भी वह वंचित करती जा रही है। पति और परिवारवाले उसके वेतन के भोगी बने हैं। **गली रंगरेजान** उपन्यास में लेखिका लता शर्मा नौकरीपेशा नारी अंजू के वेतन का भोग करनेवाले और फिजूल खर्च करनेवाले ससुरालवालों के प्रति टिप्पणी करती है कि "**अंजू ने नौकरी जीवन स्तर सुधारने के लिए की थी। सामाजिकता निबाहने और धार्मिक आयोजनों के लिए नहीं ।**" [2]

आजकल जन्म दिये माता-पिता भी लड़की का शोषण करने से नहीं चूक रहे हैं। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए उसे विवाह से वंचित करने के कारण आजीवन अविवाहिता रहकर अपने माता-पिता और भाई-भाभियों की आजीवन सेवा करते हुए निर्मम यातनाओं को सहते हुए विवश भरी जिंदगी बिता रही है। पिता और परिवार जन के स्वार्थ की शिकार **एक ऐसे भी निर्भया** उपन्यास की रजनी बनती है। लेखिका **मीना अरोड़ा** ने परिवार के लिए देह व्यापार में उतरनेवाली रजनी के समाज सेविका सुधा से कहे गये इस कथन के द्वारा चित्रित किया है कि -"**लौटना तो मैं भी नहीं चाहती थी नरकभरी जिंदगी में पर छोटी, छोटू और मां की हालत देखकर मजबूर थी। अब सब बहुत खुश है।** "[3]

20 वीं सदी के अंतिम दशक तक यदि देखा जाय, तो समष्टि परिवार का अस्थित्व खतरें में रहा था। सरकारी नौकरी या निजी संस्थाओं में नौकरी करनेवाले परिवार के सदस्यों को भी परिवार से दूर रहने के कारण एकल परिवार भी विघटित हुआ। तलाक, विवाहेतर संबंध, परिवार के किसी एक व्यक्ति की हत्या या आत्महत्या के कारण भी सिंगल पेरेंट परिवार अस्थित्व में आये हैं । शिक्षिता और पढ़ी-लिखी नारी का पारिवारिक और दाम्पत्य जीवन भी सुखमय नहीं रहा है। कार्यालय में काम की व्यस्थता, बच्चों की देखभाल, उनकी शिक्षा, उनकी हर ज़रूरत की पूर्ति करने में माँ के रूप में नौकरीपेशा नारी कामयाब नहीं हो पा रही है। कहीं न कहीं वह अपनी जिम्मेदारियों की पूर्ति करने में चूक रही है। पति और पत्नी के रूप में भी वह अपनी दुहरी जिम्मेदारी के

कारण न्याय कर नहीं पा रही है। **रजनी गुप्त** ने **ये आम रास्ता नहीं** उपन्यास की मृदु को भी इसी स्थिति से गुजरते हुए चित्रित किया है कि - " **थाली फिंकते देख वे भी ताव में आ गयीं और गुस्से में छोटे पर झपट्टा मारते हुए चिल्लाने लगी- 'क्यों नहीं अपने बाप से कहकर खाना वाली रख लेता ? मेरे पास उतना टाइम नहीं बचता अब?"**[4]

यदि विवाह हो जाता है तो भी पति, सास-ससुर प्रेम और आत्मीयता के स्थान पर स्वार्थ से काम लेते हैं। धन के लिए उनके द्वारा दी जानेवाली यातनाओं को भी उसे झेलनी पड़ती है। यहाँ तक कि उस की खुद की संतान भी माँ की संपत्ति व धन का न जायज उपयोग करते हुए भ्रष्ट जीवन के लिए आदि हो रही है। नौकरीपेशा नारी की सबसे बड़ी समस्या है –संतान की परवरिश। अपनी संतान पर पूरा ध्यान न दे पाने के कारण संतान बुरी आदतों की शिकार बनना ही नहीं, आधुनिकता की मोह में विलासमय जीवन जीने की ओर आकर्षित होकर धन के लिए माता-पिता को प्रताड़ित करती हुई देखी जाती हैं। **सपनों की होम डिलीवरी** उपन्यास मे लेखिका **ममता कालिया** ने संतान की परवरिश में चूकनेवाली नौकरीपेशा नारी का चित्रण किया है, जिसके कारण अंत में बच्चे की मृत्यु भी हो जाती है। सर्वेशन के द्वारा रुचि से कहे गये इस कथन से यह जाहिर होता है कि- **"मनजीत की गलती थी बेटे से दब गई उसे अंश का कान पकड़ कर उसे स्कूल से उठा लेना था। अंश धीरे-धीरे नशे की नालियों में फ़सता गया मनजीत अपनी नौकरी में मस्त रही।"**[5]

नारी का जीवन यांत्रिक बनने के कारण उसकी कोमल भावनाएं कठोरता में तबदील हो रही हैं। कोमलता के लिए प्रसिद्ध नारी में धीरे-धीरे कोमलता के तत्व समाप्त से हो रहे हैं। ऐसे में दम्पति दाम्पत्य सुख से भी वंचित होकर यांत्रिक जीवन जी रही है। नगरों व महानगरों में नारी का जीवन ग्रामीण नारी जीवन से भिन्न पाया जाता है। ग्रामों में सीमित परिवेश होने के कारण नारी एक हद तक शांत जीवन जी रही है। जीवन की भागदौड़ की स्थितियाँ उसके जीवन में पनपने की कम संभावनाएं हैं। इसी प्रकार विलासमय जीवन और सैर-सपाट से ग्रामीण वातावरण मुक्त होने के कारण नारी लोगों की आशाएँ और आकांक्षाएँ भी सीमित होती हैं। ग्रामीण नारी का जीवन नगर व महानगरीय नारी के जीवन से भिन्नता रखता है। नगर व महानगर में नारी की चारों ओर फैशन का, आड़ंबर आदि का चकाचौंध होने के कारण उसके परिवार के सदस्य ही नहीं, बल्कि स्वयं भी उनके भोग की आकांक्षा रखती है, जिससे उसके जीवन में सरसता का लोप होकर यांत्रिक बन जाता है। मनोज सिंह **के कशमकश** उपन्यास में संचिता की मां गायत्री से अपनी पोती गेंसू कहती हैं कि -**" तो इसमें बुराई क्या है, जो जिसके पास होगा वही तो दिखाएगा। किसी के पास बुद्धि होती है, कोई अपनी शक्ति बेचता है, कोई अपना घर किराये पर देता है तो कोई अपना हुनर बेच रहा है, क्या फर्क है .....।"**[6]

भारतीय समाज आर्थिक दृष्टि से वर्गों में विभाजित हुआ है। स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद समाज में तीन वर्ग दिखाई देते हैं -निम्न, मध्य और उच्च वर्ग। लेकिन नई सदी के अंतिम चरण तक और दो वर्ग अस्थित्व में आये हैं । वे हैं- निम्न मध्य वर्ग और उच्च मध्य वर्ग। निम्न-मध्य-वर्ग और उच्च-मध्य-वर्ग की आशाएँ और आकाक्षाएँ

अपनी क्षमता से अधिक होने से उत्पन्न परिणामों का असर नारी के जीवन पर भी पड़ा है। चंद पति स्वयं नारी को धन कमाने के यंत्र के रूप में उसकी देह से धंधा करते हुए दिखाई देते हैं। चंद नारियाँ भी धन के प्रति मोह और महत्वाकांक्षा के कारण देह व्यापार करने से भी नहीं चूक रही हैं। इसके लिए तरह-तरह के मार्गों को अपना रही हैं। शरद सिंह अपने **कस्बाई सिमोन** उपन्यास में कीर्ति एक माँ के कर्तव्य को निभाने के लिए देह व्यापार करने से हिचकती नहीं है। इसलिए वह धन कमाने का सबसे आसान तरीका देह व्यापार को चुनती है। सुगंधा से कह गये उसके इस कथन में आधुनिक युग में नारी अपनी संतान की परवरिश के लिए मेहनत की कमाई की जगह पर देह व्यापार के द्वारा कमा रही है। उसकी दृष्टि में शील का कोई महत्व नहीं रह गया है। कीर्ति के इस कथन से यह स्पष्ट होता है किः **- हमें अपने बच्चों को अच्छा भविष्य देना था तो कोई रास्ता तो चुनना ही पड़ता। हमें जो आसान लगा, यह हमने चुना।** [7]

नौकरी के क्षेत्र में नारी का अपमान उसके शोषण की घटनाएँ भी यत्र-तत्र देखी जाती हैं । चंद माता-पिता ही धन की लालच में अपनी बेटियों के साथ देह व्यापार करवाना ही नहीं, उन्हें कई प्रकार की यातनाएं देकर पीड़ित करते हुए भी देखे जाते हैं। परिवार के सदस्यों के आपसी आत्मीय संबंधों का भी अभाव देखा जाता है। आत्मीयता के अभाव के कारण आज माँ व सास वृद्ध अवस्था में विडंबनात्मक जीवन जीने के लिए मजबूर हो रही है, और संतान की उपेक्षा की शिकार बनकर यातनामय जीवन जी रही हैं। आज धन आत्मीय संबंधों के बनने और बिगड़ने का मूल कारण रहा है। **स्वाँग** उपन्यास में **उषा यादव** ने बच्चों द्वारा तिरस्कृत विधवा माँ के विडम्बनात्मक जीवन का चित्रण किया है कि **"पति ने लाखों की जमीन-जायदाद खड़ी की, पर उनकी आँख मूँदते ही अभागी विधवा को दो रोटियों के लाले पड़ गए। बेटे-बहू की आँखों की शहतीर बन गई। ऐसा भी नहीं कि व्यर्थ की दखलंदाजी का स्वभाव था, फिर भी न जाने क्यों बहुरानी उन्हें ज्यादा दिन झेल नहीं सकी ।"**[8]

नारी राजनीतिक क्षेत्र में बहुत पहले ही कदम रख चुकी है। प्रायः नई सदी से पूर्व राजनीति में स्त्रियों की संख्या बहुत कम थी। दो हजार के बाद यह संख्या निरंततर बढ़ती गई है। सन् 2023 में 33 प्रतिशत नारी आरक्षण का भी कानून पारित किया गया है। नारी आज ग्राम पंचायती स्तर से लेकर बड़े-बड़े मंत्री पद पर आसीन हो रही है। लेकिन कहीं कहीं यह भी देखा जाता है कि उसके राजनीतिक कार्यकलापों में पति या किसी अन्य पुरुष का हस्तक्षेप होते हुए दिखाई देता है। पुरुष के नियंत्रण में ही वह अपना कार्य संभालते हुए भी देखी जाती है। राजनीति में चंद राजनीतिक नेताओं के द्वारा उसका शारीरिक शोषण भी किये जाते हुए उपन्यासों में चित्रित किया गया है। **ये आम रास्ता नहीं** उपन्यास में **लेखिका रजनी गुप्त** ने मृदु के बारे मे प्रदेश अध्यक्ष के इस कथन के द्वारा राजनीतिक क्षेत्र में नारी पर होनवाले अत्याचारों का चित्रण किया है कि - " **तो ये औकात है राजनीति की तरफ कदम बढ़ाने वाली औरतों की । किस कदर उन्हें नींबू की तरह निचोड़कर परे फेंक दिया जाता है.... कितनी बेरहमी से इस्तेमाल करते हैं ये नेता लोग उसका।"** [9] राजनीति में भी यत्र-तत्र नारियों के शोषण की घटनाएँ भी देखने को मिलती है।

इस प्रकार नारी स्वतंत्र होते हुए भी पुरुष आधिपत्य से पीड़ित दिखाई देती है। कार्यालयों में कार्यरत नारी अधिकारियों का दबाव, कार्य का दबाव आदि झेलती है। नारी आज कई क्षेत्रों में कार्य भार संभल रही है। पुलिस विभाग, सिविल सर्विस, विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि विभागों में पुरुष के बराबर कार्य भार संभाल रही है। एक ओर नारी अपनी उपलब्धियों पर खुशी जता रही है, तो दूसरी ओर उसमें होनेवाली विभिन्न कठनाइयों व संघर्ष भरे जीवन के प्रति भी असंतोष और तनाव की स्थितयों का सामना कर रही है, जिसका प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। हृदरोग से पीढ़ित होने वाली नारियों की संख्या आज बढ़ती जा रही है। इसका कारण कार्य क्षेत्र में तनाव की स्थितियाँ ही मानी जा रही है।

नई दशक में धार्मिक क्षेत्र में भी नारी की भूमिका अवश्य देखी जाती है । पुराने जमाने में धर्म और धार्मिक क्रिया-कलाप जैसे पूजा-पाठ, व्रत-उपवास आदि घर और परिवार तक ही सीमित रहते थे। लेकिन, नई सदी में धर्म का संबंध बाह्य कार्य-कलापों से अधिक जुड़ने के कारण धर्म समाज में बहुत बड़ी भूमिक निभा रहा है। नारियाँ भी बड़ी संख्या में धार्मिक कार्य कलापों में अपने आपको संलग्न कर रही है। धार्मिक विश्वासों के विरोध कर मंदिरों में स्त्रियों के प्रवेश का हक की प्राप्ति में कामयाब हो रही है। वह एक ओर साधु-सन्यासियों के सांगत्य में रहकर ज्ञान प्राप्ति की साधना करती है तो, दूसरी ओर आश्रमों में रहकर अत्याचारों व यौवन शोषण की शिकार भी बन रही है। अंधविशावासों के कारण भी वह धोखा खाती हुई व ठगती हुई भी दिखाई देती है। नई सदी में विहार यात्राओं का भी भरमार हो गया है। तीर्थ स्थानों की यात्रा करना, मंदिर दर्शन करना, धार्मिक कार्यों को संपन्न करना, व्रत –उपवास रखना, पूजा-पाठ आदि में भी नारी की झुकाव दिखाई देती है। धार्मिक अनुष्ठानों की पीर्ति के लिए सास के द्वारा लांछन लगाये जाने की घटनाएँ भी दिखाई देती हैं। लता शर्मा के **गली रंगरेज़ान** उपन्यास अंजू जो नौकरीपेशा नारी है, उसकी सास उस पर ऐसा लांछन लगाती है कि पूजा-पाठ और घर में आनेवाले नाते – रिश्तेदार के स्वागत सम्मान करके ही उसे आँफीस जाना है । नौकरीपेशा नारी की इस विवशता को लेखिका ने इस प्रकार चित्रित किया है कि -" **जब से अम्माँ-बाबूजी आये हैं, जीवन-शैली में आमूल-चूल परिवर्तन हो रहे हैं। आये दिन सर्वथा अपरिचित नाते-रिश्तेदारों का आना, उनका स्वागत-सत्कार और सप्ताह में चार तीज-त्योहार! पत्रा देखे बिना चूल्हे पर दाल भी नहीं चढ़ाई जाती। अब और जल्दी उठो, पहले नहाओ, पूजा-पाठ निपटाओ, तब खाना बनाओ, फिर स्कूल-कॉलेज जाने की सोचो। न हो तो आज छुट्टी ले लो। मौनी अमावस्या के दिन कॉलेज कैसे जाओगी?... आज बड़मावस है। आज तो बरगदे बनने हैं, बरगद की पूजा होगी ।**" [10] कहीं-कहीं त्योहार आदि भी उसके जीवन दुखदायी बनाते हैं

सांस्कृतिक रूप से भी देखा जाय तो नारी में बहुत बड़ा परिवर्तन दिखाई देता है। वह पुरानी विचार धारा से मुक्त होती दिखाई देती है। विवाह, स्त्री-पुरुष संबंध, रहन-सहन, खान-पान, पहनाव-ओढ़ाव, भाषा, पाश्चत्य संस्कृति के प्रति मोह आदि कई विषयों पर उसकी विचार धारा में परिवर्तन दिखाई देता है। विशेषतया आधुनिक पीढ़ि प्रवासी जीवन के लिए आदि होकर, भारतीय संस्कृतिको विस्मृत कर रही है। परिणाम स्वरूप

उसकी भारतीयता और भारतीय जीवन विधान के प्रति धारणा बदल गई है । वह पाश्चात्य संस्कृति और जीवन शैली की ओर प्रभावित हुई है। अधिकांश भारतवासी नौकरी की तलाश में प्रवास होने के कारण भी विदेशी संस्कृति अत्यंत तेजी से भारत में प्रवेश कर भारतीय सासंस्कृतिक परिवेश को तेजी से बदल रही है। परिणामतः नारी जीवन के विभिन्न पक्ष भी प्रभावित हुए हैं। भगवंत अनमोल के जिंदगी 50-50 उपन्यास में अनमोल को पुत्र संतान होने पर वह 5 स्टार होटल में पार्टी का आयोजन करते हैं। पार्टी में आशिका पति के साथ खुद शराब पीती है । अनमोल अपनी पत्नी पर हावी हुई विदेश संस्कृति पर इस प्रकार सोचता है कि - " **वेटर दो पैग लेकर आ गया । हम दोनों ने एक-एक पैग उठाया और चियर्स करते हुए सिप लेने लगे। बकार्डी व्हिस्की क्रैनबेरी जूस के साथ बिलकुल जूस की तरह लगती है। इससे मेरी बीवी को भी कोई समस्या नहीं होती पीने में और वह मेरा साथ भी दे लेती है। "**[11]

इस प्रकार देखा जाय तो नई सदी एक परिवर्तन का काल है। जीवन के प्रति की दृष्टि में ही बहुत बड़ा परिवर्तन दिखाई देता है। नई सदी का दूसरा दशक भी संक्रमण का काल ही रहा है। क्योंकि नई सदी में कोई भी विचार या भाव स्थिर नहीं रहा। उसके अस्तित्व का काल अत्यंत छोटा रहा। परिवर्तन की गति अत्यंत तेज रही। इसलिए, कोई शाश्वत मूल्य या शाश्वत विचार नहीं रहा। इसलिए जीवन और उसकी गतिविधियाँ भी अत्यंत तेजी से बदलती जा रही हैं। साहित्य समाज का दर्पण है। जितनी तेजी से समाज परिवर्तित हो रहा है, उतनी ही तेजी से साहित्यकार भी अपने साहित्य में इन परिवर्तनों को अंकित करता आया है। नई सदी के दूसरे दशक के परिवेश का निर्माण उसके पूर्ववर्ती सदी की पृष्ठभूमि में हुआ है। यह नये और पुराने का मिश्रित और संधिकाल रहा है। इसलिए, साहित्य में भी संधि स्थितियाँ और विचारधाएँ अंकित किये गये हैं। दूसरे दशक का नारी जीवन भी संधि स्थिति से गुज़रने के कारण उसको अच्छे और बुरे परिणामों से प्रभावित होते हुए चित्रित किया गया है।

संदर्भ सूची:

1.पृ.स. 60 कशमकश, मनोज सिंह

2. पृ. सं. 28 गली रंगरेज़ान, लता शर्मा

3.पृ. सं. 128 एक ऐसी भी निर्भया, मीना अरोड़ा

4 पृ. सं. 21 ये आम रास्ता नहीं, रजनी गुप्त

5 पृ. सं. 50 सपनों की होम डिलीवरी, ममता कालिया

6.पृ. सं. 320 कशमकश, मनोज सिंह

7.पृ. सं. 192 कस्बाई सिमोन, शरद सिंह

8. पृ. सं. 48 स्वाँग, उषा यादव

9.पृ. सं. 11 ये आम रास्ता नहीं, रजनी गुप्त .

10.पृ.सं. 27-28 गली रंगरेज़ान, लता शर्मा

11.पृ. सं. 57 जिंदगी 50-50, भगवंत अनमोल

****